JESUS REDEEMS MINISTRIES

युवा
जीवन

सितम्बर 2026

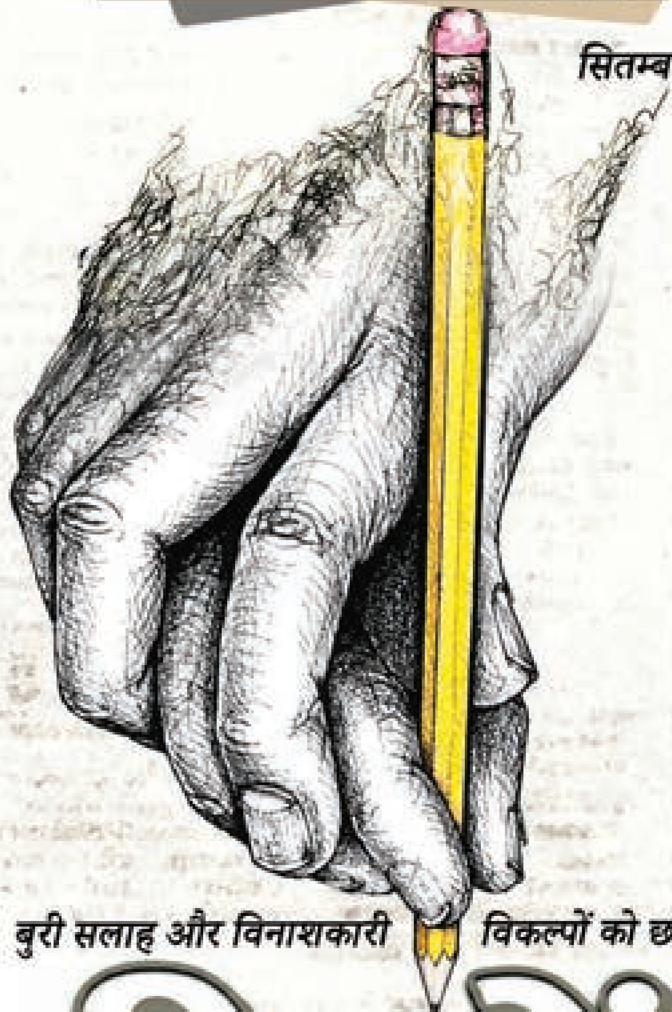

बुरी सलाह और विनाशकारी विकल्पों को छोड़ें,

सीखें

अच्छाई और सही मार्ग को अपनाना।

प्रस्तावना

मेरे प्रिय युवा मित्रों,

हमारे प्रभु यीशु मसीह के अनमोल नाम में आपको अभिवादन!

परमेश्वर का वचन कहता है कि आप सामर्थी हैं(1 यूहन्ना 4:4)। आपको दृढ़ विश्वास रखना चाहिए कि जो आप में वास करता है, वह संसार में रहने वाले से कहीं अधिक महान है। पवित्र आत्मा, जो आप में वास करता है, आपको सब कुछ सिखाएगा और सच्चाई के मार्ग पर विश्वासयोग्यता से आपका मार्गदर्शन करेगा।

आज हम जिस संसार में रह रहे हैं, वह ऐसी झूठी शिक्षाओं और विचारधाराओं से भरता जा रहा है जो परमेश्वर के वचन के विरुद्ध हैं। साथ ही, शैतान तेज़ी से ऐसी पीढ़ी तैयार कर रहा है जो युवाओं के बीच बुरी प्रथाओं और अधर्मी संस्कृति को बढ़ावा दे रही है। इसलिए यह अत्यन्त आवश्यक है कि आप स्वयं को झूठी शिक्षाओं और नकली आराधना से सुरक्षित रखें।

ऐसे समय में आपको पवित्र शास्त्र की सच्चाइयों में दृढ़ता से स्थापित होना आवश्यक है। आपको सच्ची जागृति और झूठी जागृति के बीच का अन्तर समझना होगा। आपको यह भी स्पष्ट रूप से समझना होगा कि सच्ची आराधना क्या है और केवल दिखावटी या नकली आराधना क्या है।

प्रिय युवा मित्रों, परमेश्वर कहता है:

“मैं ही तेरा परमेश्वर यहोवा हूँ, जो तुझे तेरे लाभ के लिए शिक्षा देता हूँ, और जिस मार्ग में तुझे जाना है उसी मार्ग पर तुझे ले चलता हूँ” (यशायाह 48:17)।

प्रेरित पौलुस की तरह आपको भी पवित्र जोश और उत्साह के साथ खड़े होना चाहिए और अपनी पीढ़ी को निडर होकर सुसमाचार सुनाना चाहिए।

- पौलुस ने गलातिया की कलीसियाओं में प्रवेश कर चुकी बिगड़ी हुई सुसमाचार की शिक्षाओं की कड़ी निन्दा की।
- उसने कुरिन्थ की कलीसिया में मौजूद पापपूर्ण सम्बन्धों का साहसपूर्वक सामना किया।
- तिमुथियुस को लिखे अपने पत्रों में उसने विश्वासियों को झूठी शिक्षाओं से दूर रहने की चेतावनी दी।

जिस प्रकार पौलुस प्रेरितों के दिनों में परमेश्वरीय उत्साह के साथ सच्चाई के पक्ष में खड़ा हुआ था, उसी प्रकार आपको भी आज साहस और दृढ़ विश्वास के साथ बुराई फैलाने वाले प्रभावों का विरोध करने के लिए उठ खड़ा होना चाहिए।

जब आप प्रभु की प्रतीक्षा करते हैं, उससे सामर्थ्य प्राप्त करते हैं और आज्ञाकारिता में आगे बढ़ते हैं, तब आप अन्धकार के कार्यों पर विजय प्राप्त करने के लिए परमेश्वर के प्रभावशाली साधन बन सकते हैं।

आइए, हम प्रार्थना करें कि संसार भर में फैलने वाला जागृति नकली न हो, बल्कि परमेश्वर की ओर से आरम्भ किया गया एक सच्ची जागृति हो—ऐसी जागृति, जो पवित्र आत्मा की सामर्थ्य से लोगों और राष्ट्रों के जीवन को बदल दे।

मसीह मिशन में

मोहन सी. लाजरस

सीमाओं से परे सपने!

प्रिय युवा अचीवर्स, आप सभी को मेरा स्नेहपूर्ण अभिनन्दन! जीवन में सफलता केवल धन, ऐश-ओ-आराम या शारीरिक ताकत से तय नहीं होती है। सच्ची और स्थायी सफलता का निर्माण आत्मविश्वास, दृढ़ता और आप जिस लक्ष्य का पीछा कर रहे हैं, उसमें अटूट विश्वास से होता है। इसका एक अनूठा और शानदार उदाहरण अब्दुल्ला अफरीद हैं, जिनकी प्रेरक जीवन यात्रा हमें याद दिलाती है कि दृढ़ संकल्प से सबसे बड़ी बाधाओं को भी पार किया जा सकता है।

अब्दुल्ला अफरीद की सफलता की राह आसान बिल्कुल नहीं थी। बचपन से ही वह सेरेब्रल पाल्सी (प्रमस्तिष्क पक्षाघात) से पीड़ित थे। यह एक न्यूरोलॉजिकल (तांत्रिकीय) स्थिति है, जिसने उनकी मांसपेशियों की गति और उनके हाथ-पैरों के तालमेल को प्रभावित किया। जिन कामों को अधिकांश लोग बिना किसी प्रयास के आसानी से कर लेते थे, उन कामों को करने के लिए उन्हें असाधारण धैर्य और दृढ़ संकल्प की आवश्यकता होती थी।

इसके अलावा, अब्दुल्ला कम दृष्टि (दृष्टिबाधित) के साथ भी जी रहे थे। किताबें पढ़ना, नोट्स तैयार करना और लंबे समय तक पढ़ाई करना उनके लिए रोज की चुनौतियाँ थीं। फिर भी, इनमें से कोई भी शारीरिक सीमा उनके सपनों को तोड़ नहीं सकी। अपनी इस स्थिति को एक कमजोरी के रूप में देखने के बजाय, अब्दुल्ला ने इसे और अधिक मेहनत करने के एक कारण के रूप में चुना। उनकी चुनौतियों ने ही उनकी प्रेरणा का रूप ले लिया।

इसी अटूट संकल्प के साथ, उन्होंने यूपीएससी सिविल सेवा परीक्षा (UPSC) के लिए पूरी लगन से तैयारी की। यह भारत की सबसे कठिन और प्रतिस्पर्धी परीक्षाओं में से एक है, जहाँ हर साल हजारों उम्मीदवारों के बैठने के बावजूद केवल गिने-चुने लोग ही सफल हो पाते हैं। कई शारीरिक और शैक्षणिक चुनौतियों का सामना करते हुए, अब्दुल्ला ने वह कर दिखाया जिसे कई लोग असंभव मानते थे। उन्होंने अपने पहले ही प्रयास में ऑल इंडिया रैंक (AIR) 942 हासिल की और यह साबित कर दिया कि दृढ़ संकल्प किसी भी दिव्यांगता या अक्षमता से कहीं अधिक मजबूत होता है।

प्रिय युवा पाठकों, अब्दुल्ला का जीवन हमें एक शक्तिशाली सबक सिखाता है: आपकी परिस्थितियाँ आपका भविष्य तय नहीं करतीं—बल्कि आपके फैसले तय करते हैं। सपने देखने का साहस करो। अपने सपने को पूरा करने के लिए बिना थके, निरंतर मेहनत करो। बाधाओं को कभी भी स्वयं को डराने मत दो। एक दिन, आपकी यही दृढ़ता और लगन एक ऐसी उपलब्धि बनेगी जो पूरी दुनिया को प्रेरित और चकित कर देगी।

मौत की दहलीज़ से वापसी!

क्या आप हमें अपने परिवार और बचपन के बारे में बता सकती हैं?

मेरा नाम दिलानी मोनीशा है। मैं श्रीलंका के बदुल्ला ज़िले के पहाड़ी गाँव पाशर से हूँ। मेरे माता-पिता दोनों शिक्षक हैं और मेरी एक छोटी बहन भी है। मेरी परवरिश एक रोमन कैथोलिक परिवार में हुई। जब मैं आठ साल की थी, तो मेरे माता-पिता अलग हो गए और मेरी माँ ने अकेले ही मुझे और मेरी बहन को पाला-पोसा और पढ़ाया-लिखाया। बचपन से ही मेरा एक सपना था—IT इंडस्ट्री में सॉफ्टवेयर इंजीनियर बनना। मैंने पूरे जोश, दृढ़ संकल्प और कड़ी मेहनत के साथ अपने इस सपने को पूरा करने की कोशिश की।

पढ़ाई में आप अच्छा कर रही थीं और आपके बड़े-बड़े सपने थे। आपके रास्ते में क्या रुकावट आई?

2016 में, जब मैं 11वीं कक्षा में पढ़ रही थी, तो मुझे याददाश्त कमज़ोर होने और यूरिनरी ट्रैक्ट इन्फेक्शन (UTI) की समस्या होने लगी। अगले साल, 12वीं कक्षा के दौरान, मुझे पेट के दाहिने हिस्से में तेज़ दर्द, बार-बार उल्टी, पैरों में सूजन और बहुत ज़्यादा थकान महसूस होने लगी। दर्द असहनीय हो गया और मेरी पढ़ाई पर बुरा असर पड़ा। स्कैन के बाद, डॉक्टरों ने बताया कि मेरी एक किडनी जन्म से ही पूरी तरह विकसित नहीं हुई थी और अब ठीक से काम नहीं कर रही थी। उन्हें यह भी पता चला कि वह मेरी दूसरी किडनी के मुकाबले काफ़ी छोटी थी।

यह सुनकर आपको कैसा लगा? फिर क्या हुआ?

ऐसा लगा मानो मेरे सारे सपने मेरी आँखों के सामने ही टूटकर बिखर गए हों। डॉक्टरों ने बताया कि मेरी दूसरी (स्वस्थ) किडनी भी खराब होने लगी थी। उन्होंने चेतावनी दी कि अगर खराब किडनी को निकालकर किडनी ट्रांसप्लांट नहीं किया गया, तो मेरी जान को खतरा हो सकता है। मेरी जान बचाने के लिए, मेरी माँ ने मेरे इलाज का खर्च उठाने के लिए अपने सारे गहने और अपनी सारी बचत बेच दी। बाद में, उन्होंने बैंक से लोन भी लिया ताकि मेरा इलाज जारी रह सके। उस समय, मुझे सच्चे परमेश्वर के बारे में कोई जानकारी

नहीं थी। अपनी रोमन कैथोलिक परंपराओं के अनुसार, हम कई धार्मिक रीति-रिवाज़ निभाते थे। हमने ठीक होने की उम्मीद में भारत की यात्रा भी की और हर मुमकिन इलाज आज़माया। लेकिन किसी भी चीज़ से कोई फ़ायदा नहीं हुआ। 8 जून, 2018 को एक और स्कैन के बाद, डॉक्टरों ने हमें तुरंत किडनी ट्रांसप्लांट की तैयारी करने को कहा। लेकिन किसी को यह पता नहीं था कि मैंने पहले ही तय कर लिया था कि 7 जून मेरी ज़िंदगी का आखिरी दिन होगा। मैंने आत्महत्या करके अपनी जान देने का फ़ैसला कर लिया था।

आपने अपनी जान लेने का फ़ैसला क्यों किया? जिस दिन आपने यह सोचा था, उस दिन क्या हुआ?

6 जून को, हमारे एक रिश्तेदार ने हमें बदुल्ला इलाके में ब्रदर मोहन सी. लाज़रस की एक मीटिंग में बुलाया। रोमन कैथोलिक माहौल में पली-बढ़ी होने के कारण, मुझे परमेश्वर को व्यक्तिगत रूप से जानने में कोई दिलचस्पी नहीं थी। मैं सिर्फ़ अपनी माँ के ज़ोर देने पर मीटिंग में गई थी। मीटिंग में बैठे हुए भी, मेरे मन में बस एक ही बात चल रही थी—कि मैं अगले ही दिन अपनी जान दे दूँगी। देश के लिए प्रार्थना के दौरान, मुझे लगा कि हमारे लिए कोई प्रार्थना नहीं करेगा, इसलिए मैं वहाँ से निकलने की कोशिश करने लगी। लेकिन भीड़ ज़्यादा होने के कारण मैं बाहर नहीं निकल पाई। ठीक उसी पल, ब्रदर मोहन सी. लाज़रस ने कहा, "एक युवती आत्महत्या की भावना से जकड़ी हुई है। आगे आओ। आज तुम्हारे आज़ाद होने का दिन है। आज तुम्हारी ज़िंदगी बदलने वाली है।" जैसे ही मैंने ये शब्द सुने, पता नहीं कैसे, लेकिन अगले ही पल मैंने स्वयं को स्टेज के सामने खड़ा पाया। जब वे प्रार्थना कर रहे थे, तो अचानक मुझे ऐसा महसूस हुआ जैसे मेरा हृदय फट गया हो और खून तेज़ी से बाहर निकल रहा हो। घबराकर मैंने चारों ओर देखा, लेकिन असल में कुछ नहीं हुआ था। यह बस एक ज़बरदस्त एहसास था। मीटिंग के बाद, हम घर लौट आए।

यह अविश्वसनीय है। घर लौटने के बाद आपकी मनःस्थिति कैसी थी?

उस पूरी रात, मैंने एक बार भी आत्महत्या के बारे में नहीं सोचा। इसके बजाय, मेरा हृदय गहरे सुकून और ऐसी खुशी से

भर गया था, जैसा मैंने पहले कभी महसूस नहीं किया था। अगले दिन, हम CT स्कैन के लिए अस्पताल गए। कुछ दिनों बाद, वरिष्ठ डॉक्टरों ने रिपोर्ट को ध्यान से देखा और हैरान रह गए। उन्होंने हमें बताया कि मेरी खराब किडनी में पहले जो असामान्य कोशिकाएँ (abnormal cells) पाई गई थीं, उनका कोई नामो-निशान नहीं था। पिछले स्कैन में जो कुछ भी पता चला था, वह सब पूरी तरह से गायब हो गया था। आज तक, प्रभु ने मुझे पूरी तरह स्वस्थ रखा है।

आप कहती हैं कि इतना अद्भुत चमत्कार हुआ। लेकिन तब तो आप परमेश्वर में विश्वास भी नहीं करती थीं। आपको कैसे पता चला कि यीशु मसीह ही सच्चे परमेश्वर हैं?

आज भी, मैं पूरी तरह से नहीं बता सकती कि यह कैसे हुआ। चमत्कार के कुछ दिनों बाद, मेरे मन में सवाल उठने लगे। "असली परमेश्वर कौन है? इतने सालों तक मैं उन्हें क्यों नहीं जान पाई? मुझे ठीक करने से पहले उन्होंने मुझे इतना दुख क्यों सहने दिया?" उस समय, यशायाह 41:10 का वचन मेरे मन में आया। मेरे पास सिर्फ़ रोमन कैथोलिक बाइबल थी। जैसे ही मैंने उसे पढ़ना शुरू किया, ये शब्द - "डरो मत, क्योंकि मैं तुम्हारे साथ हूँ..." - मेरे मन में ऐसे गूंजे जैसे कोई सीधे मेरे हृदय से बात कर रहा हो। फिर मुझे महसूस हुआ कि प्रभु मुझसे कह रहे हैं: "मैंने स्वर्ग और पृथ्वी की रचना की है। तुम्हें क्या लगता है कि तुम्हारे शरीर के इस छोटे से अंग को फिर से बनाने में मुझे कितना समय लगेगा?" मैंने पूछा, "आप कौन हैं?" मेरे हृदय की गहराई में मुझे जवाब मिला: "मैं प्रभु यीशु मसीह हूँ।"

उस पल मेरे मन में जो शांति और ख़ुशी भर गई, वह किसी भी चीज़ से कहीं बढ़कर थी। शब्दों में बयां नहीं किया जा सकता।

यह अद्भुत है! भले ही आपको परमेश्वर पर विश्वास नहीं था, फिर भी यीशु ने स्वयं को आप पर प्रकट किया। क्या आपने उसके बाद उन्हें अपनाया?

हाँ। उस अनुभव के बाद ही मुझे सच में अपने पापों का एहसास हुआ। मैंने प्रभु के सामने अपने सभी पापों को स्वीकार करना और सच्चे मन से प्रार्थना करना शुरू किया। तभी मुझे समझ आया कि पापों की क्षमा केवल यीशु मसीह के द्वारा ही मिलती है। उस पल से, मेरे मन में प्रभु के मार्गों को जानने की गहरी इच्छा पैदा हुई। ब्रदर मोहन सी. लाज़रस के संदेशों के माध्यम से, मैंने प्रार्थना का जीवन जीना सीखा।

बाद में, मैंने एक पवित्र बाइबिल खरीदी और उसे पूरी निष्ठा से पढ़ना शुरू किया। 2018 में, प्रभु ने मुझे पवित्र आत्मा के बपतिस्मा से भी भर दिया।

आपको चंगाई मिली और आप पवित्र आत्मा से भर गए। क्या आपने तुरंत प्रभु की सेवा शुरू कर दी?

तुरंत नहीं। मेरी माँ, रिश्तेदारों और कई अन्य लोगों ने ज़ोर दिया, "भले ही आप ठीक हो गए हों, आपको हमारे चर्च में ही रहना होगा।" मुझे दूसरी सभाओं में जाने से रोकने के लिए, उन्होंने मुझे कई ज़िम्मेदारियाँ सौंप दीं। नतीजतन, मुझे भारी विरोध और कई संघर्षों का सामना करना पड़ा। उस

दौरान, मुझे अपने दादाजी की बाइबिल मिली, जिन्हें पहले ही उद्धार का अनुभव हो चुका था। उनके लिखे नोट्स और वचनों ने मुझे प्रभु को और गहराई से जानने में मदद की। तभी मेरे हृदय में यह अटूट विश्वास बैठ गया कि यीशु मसीह ही एकमात्र सच्चे ईश्वर हैं। उस समय से, मैंने हर संभव तरीके से प्रभु की सेवा करना शुरू कर दिया। इस वजह से, मुझे अपने ही परिवार से अस्वीकृति और विरोध का सामना करना पड़ा। फिर भी, भले ही लोगों ने मुझे ठुकरा दिया, यीशु मसीह ने मुझे अपनी संतान के रूप में अपनाया।

2019 में, मेरी माँ और मेरी छोटी बहन, दोनों को उद्धार का अनुभव हुआ। उसके बाद, प्रभु ने कृपापूर्वक मुझे विभिन्न सेवकाई कार्यों में इस्तेमाल किया, और मुझे उन खुलासों के माध्यम से कई लोगों के लिए आशीष का कारण बनने में सक्षम बनाया जो उन्होंने मुझे दिए थे।

2020 में, प्रभु ने मुझे बाइबिल कॉलेज बुलाया। 2021 में अपनी DTH की पढ़ाई पूरी करने के बाद, मैंने श्रीलंका में एक सेवकाई में सेवा की। बाद में, जैसा प्रभु ने मुझे मार्गदर्शन दिया, मैं एक चैरिटी संस्था से जुड़ गई, जहाँ मुझे अभी 1,854 बच्चों के लिए आशीष का कारण बनने का सौभाग्य मिला है। प्रभु ने मुझे एक मिशनरी की तरह उन इलाकों में जाने का मौका भी दिया है जहाँ 1% से भी कम लोगों ने सुसमाचार सुना है, और मैंने उन लोगों को यीशु मसीह की अच्छी खबर सुनाई है जिन्होंने कभी उनका नाम नहीं सुना था।

आप अपनी गवाही के ज़रिए क्या संदेश देना चाहेंगी?

कभी मेरा जीवन सपनों से भरा हुआ था। लेकिन जब बीमारी ने मुझे जकड़ा, तो मुझे लगा कि सब कुछ खत्म हो गया है। डॉक्टरों की जाँच, ज्योतिषियों की भविष्यवाणियाँ और भविष्य बताने वालों की बातों ने मुझे यकीन दिला दिया था कि मैं बीस साल की उम्र से ज़्यादा नहीं जी पाऊँगी। उन डरावनी बातों ने मुझे आत्महत्या करने के कगार पर पहुँचा दिया। लेकिन ठीक उसी जगह पर, जहाँ लोगों ने कह दिया था कि मेरा जीवन खत्म हो गया है, प्रभु यीशु मसीह ने मुझे एक नई शुरुआत दी। आज, मैं जीवित हूँ, स्वस्थ हूँ और प्रभु की सेवा कर रही हूँ, और यह सब उनके अद्भुत अनुग्रह के कारण ही है।

अगर इस गवाही को पढ़ने वाले किसी व्यक्ति को लगता है कि "सब कुछ खत्म हो गया है," तो हिम्मत न हारें। जिस प्रभु ने मेरे जीवन को बदला, वही आपके जीवन को भी बदल सकते हैं। परमेश्वर का वचन इंसानी सोच से कहीं बढ़कर है। यह हर मेडिकल रिपोर्ट से भी बढ़कर है। जब वे बोलते हैं, तो नामुमकिन भी मुमकिन हो जाता है। जो खो गया है, वह वापस मिल सकता है। यहाँ तक कि मौत के कगार पर खड़ी ज़िंदगी को भी एक नई शुरुआत मिल सकती है। इसलिए, चाहे आप किसी भी मुश्किल का सामना कर रहे हों, कभी उम्मीद न छोड़ें। सम्पूर्ण हृदय से प्रभु यीशु मसीह पर भरोसा रखें। वे आपको कभी नहीं छोड़ेंगे और न ही कभी आपका साथ छोड़ेंगे। वे आपके जीवन में भी एक नया अध्याय शुरू कर सकते हैं।

"मत डर, क्योंकि मैं तेरे संग हूं, इधर उधर मत ताक, क्योंकि मैं तेरा परमेश्वर हूं; मैं तुझे दृढ़ करूंगा और तेरी सहायता करूंगा, अपने धर्ममय दाहिने हाथ से मैं तुझे सम्हाले रहूंगा॥" (यशायाह 41:10)।

सुनना सीखें!!!

आज की इस तेज़ रफ्तार दुनिया में, युवा पीढ़ी अविश्वसनीय प्रतिभा, ऊर्जा और क्षमता से भरपूर है। लेकिन बुद्धिमानों की सलाह को खोजना और उसे स्वीकार करने की नम्रता रखना ही वास्तव में सफलता का मार्ग प्रशस्त करता है। हम चाहे कितना भी क्यों न जानते हों, जीवन के हर पड़ाव पर हमेशा कुछ न कुछ नया सीखने को रहता है।

सलाह मांगना कमजोरी की निशानी नहीं है—यह ताकत की पहचान है। यह नम्रता को दर्शाता है। जो लोग सीखने की भावना के साथ स्वेच्छा से बुद्धिमानों की सम्मति को स्वीकार करते हैं, वे अक्सर आगे चलकर असाधारण अगुवे बनते हैं। कभी-कभी, भली सलाह का एक छोटा सा टुकड़ा भी हमें जीवन को बर्बाद करने वाली बड़ी गलतियों से बचा सकता है।

सुलेमान के पुत्र, राजा रहबाम, 41 वर्ष की आयु में राजा बना। सिंहासन संभालने के तुरंत बाद, लोगों ने उसके पास आकर एक सच्ची विनती की: "तेरे पिता ने हम पर भारी जूआ रख दिया था, अब तू अपने पिता की ओर के उस कड़े काम और भारी जूए को जो उसने हम पर रखा था, कुछ हल्का कर दे, तब हम तेरी सेवा करेंगे।" (1 राजा 12:4)

रहबाम ने दो अलग-अलग समूहों से सलाह ली। पहले, उसने उन अनुभवी पुरनियों (बुज़ुर्गों) से परामर्श किया जिन्होंने उनके पिता के शासनकाल के दौरान सेवा किया था। फिर उसने उन जवानों की ओर मुड़ा जो उसके साथ बड़े हुए थे लेकिन उनके पास जीवन का अनुभव नहीं था।

दुख की बात है कि उसने पुरनियों की बुद्धिमान सलाह को खारिज कर दिया और अपने युवा मित्रों की सलाह को चुनना ठीक समझा। उसने लोगों को अहंकार और कठोरता के साथ उत्तर दिया। परिणाम यह हुआ कि इस्राएल का संयुक्त राज्य उत्तरी इस्राएल के दस गोत्रों और दक्षिण में यहूदा के दो गोत्रों में विभाजित हो गया।

चूंकि रहबाम ने गलत आवाजों को सुना, इसलिए यहूदा कमजोर हो गया। आपकी अपनी उम्र के मित्र आपकी भावनाओं को समझ सकते हैं, लेकिन अनुभवी लोगों की बुद्धि वह मार्गदर्शन प्रदान करती है जो आपको गलत रास्ते पर जाने से बचाती है। इसलिए, रहबाम की तरह बुजुर्गों की डांट और सम्मति की अनदेखी करने के बजाय, सच्ची बुद्धि इसे नम्रता के साथ स्वीकार करने में है।

जीवन में हमारा हर फैसला मायने रखता है। यही कारण है कि अनुभवी लोगों का मार्गदर्शन अमूल्य है। जब हम बुद्धिमानों की सलाह सुनते हैं, तो हम कई गलतियों और अनावश्यक कष्टों से बच सकते हैं।

"तब विवेक तेरी रक्षा करेगा, और समझ तेरी रखवाली करेगी।" (नीतिवचन 2:11)

तीमुथियुस ने उस बुद्धिमान सलाह और प्रेमभरी सुधार को पूरे हृदय से स्वीकार किया जो पौलुस ने उसे उसकी युवावस्था में दी थी। परिणामस्वरूप, उसने स्वयं को झूठी शिक्षाओं और जवानी की अभिलाषाओं से सुरक्षित रखा और अन्य विश्वासियों के लिए एक उत्कृष्ट आदर्श बना।

वह पौलुस के इस निर्देश के अनुसार जिया: "और प्रभु के दास को झगड़ालू होना न चाहिए, पर सब के साथ कोमल और सिखाने में निपुण, और धीरजवन्त हो।" (2 तीमुथियुस 2:24)

चूंकि तीमुथियुस ने अपनी युवावस्था में पौलुस के मार्गदर्शन को अपनाया था, इसलिए वह बाद में कलीसिया की चरवाही करने के लिए एक बुद्धिमान अगुवा बना। स्वभाव से थोड़े डरपोक होने के कारण, तीमुथियुस को इफिसुस में कलीसिया की अगुवाई करने की जिम्मेदारी मिलने पर कई चुनौतियों और विरोध का सामना करना पड़ा।

फिर भी पौलुस की सलाह ने उसे सामर्थ्य और प्रोत्साहन दिया। पीछे हटने के बजाय, तीमुथियुस ने विश्वासियों को सही दिशा में विश्वासयोग्यता से आगे बढ़ाया। उसने साहसपूर्वक कलीसिया को झूठी शिक्षाओं से बचाया और एक ऐसे विश्वासयोग्य सेवक बना रहा जिसने निडरता से सत्य का प्रचार किया।

प्रिय युवा मित्रों,

जैसे-जैसे आप जवानी के जोश और ऊर्जा के साथ अपने सपनों का पीछा करते हैं, वैसे-वैसे अनुभवी लोगों की बुद्धि और परमेश्वर की सम्मति को भी गले लगाएं। ऐसा करना आपको खतरनाक परिस्थितियों से बचाएगा और एक उज्ज्वल तथा उद्देश्यपूर्ण भविष्य की ओर आपका मार्गदर्शन करेगा। जो नम्रता आप आज विकसित करेंगे और बुद्धिमानों की बात सुनने की आपकी इच्छा, आपको कल के एक मजबूत और परमेश्वरीय अगुए के रूप में तैयार करेगी!

Revival IGNITERS

इग्नाइटर्स यूथ फ़ेलोशिप एक जगह है जहां युवा अपनी आध्यात्मिकता को प्रज्वलित करते हैं जीवन की गहन सच्चाइयों की खोज करें बाइबल, और प्रार्थना करने में शक्ति पाएँ एक समूह के रूप में देश।आपका स्वागत है इस फ़ेलोशिप में शामिल होने और बढ़ने के लिए मज़बूत। चलो भी! अपने आप को मजबूत करो,और दूसरों को मजबूत करने के लिए तैयार हो जाइये !

हर पहले रविवार
Mumbai – Dharavi
Timing: 5.00 PM- 7.30 PM
World Revival Prayer Centre
2nd Floor, Above Balakrishna
Farsan Mart, Opp. Apna Restaurant,
Near Kamarajar School,
90 Feet Road,
9004882470

हर दूसरे रविवार
THANE
Timing: 5PM - 7:30PM
R.P. Mangala High School
(Near Railway Station),
Room No.10,
Opp. Bank of Maharashtra,
Thane (East)
9004882470

हर चौथे रविवार
Mumbai-Malad
Timing: 4.00 PM – 6.00 PM
Bethel Ground Floor
305/E, Mith Chauky,
Marve Road,
Malad (W)
9664050567 | 9619996976

परमेश्वर की अलौकिक पसंद!

“लेकिन तुम एक चुना हुआ वंश, और राज-पदधारी याजकों का समाज, और पवित्र लोग और परमेश्वर की निज प्रजा हो, इसलिए कि जिस ने तुम्हे अन्धकार में से अपनी ज्योति में बुलाया है, उसके गुण प्रगट करो।” (1 पतरस 2:9)

पवित्र आत्मा घोषणा करता है कि तुम एक चुना हुआ वंश हो। प्रभु ने न केवल तुम्हें चुना है, बल्कि तुम्हारी पीढ़ियों को भी चुना है।

जब पृथ्वी महाजलप्रलय से नष्ट हो गयी थी, तो परमेश्वर ने केवल नूह को ही नहीं, बल्कि उसके पूरे परिवार को चुना और उसके वंशजों को बचाया। जलप्रलय के बाद, परमेश्वर ने नूह और उसके परिवार के ज़रिए पृथ्वी पर फिर से आबादी बसाने का अपना उद्देश्य पूरा किया। क्योंकि सर्वशक्तिमान परमेश्वर इस संसार में आना चाहता था, इसलिए उसने अब्राहम को चुना, ताकि वह एक ऐसी जाति को अलग करे, पवित्र करे और तैयार करे जिसके ज़रिए उसकी अलौकिक योजना पूरी हो सके।

अपनी पृथ्वी पर सेवा के दौरान बहुत से लोग यीशु के पीछे चले और उनके साथ रहना चाहा। फिर भी, इतनी बड़ी भीड़ में से प्रभु ने विशेष रूप से केवल बारह चेलों को चुना। “उसने बारह लोगों को नियुक्त किया ताकि वे उसके साथ रहें और वह उन्हें प्रचार करने, बीमारियाँ ठीक करने और दुष्टात्माओं को निकालने का अधिकार देकर भेज सके।” (मरकुस 3:14–15) इसी तरह, प्रभु की मुलाकात शाऊल से हुई, जो एक ऐसा नौजवान था जो यीशु का कड़ा विरोध करता था। फिर भी उसने उसे चुना और बाद में अपने राज्य के लिए उसका अद्भुत उपयोग किया।

प्रिय युवा मित्रों, चाहे तुम कोई भी हो या आज तुम्हारा जीवन कैसा भी हो, परमेश्वर की दृष्टि तुम पर है। उसका चुनना अद्भुत है, और उसका प्रेम बेमिसाल है। कोई भी मनुष्य परमेश्वर की अलौकिक पसंद के चमत्कार को पूरी तरह नहीं समझ सकता। “इससे पहले कि मैंने तुम्हें माँ के गर्भ में रचा, मैं तुम्हें जानता था... मैंने तुम्हें जातियों के लिए नबी के तौर पर नियुक्त किया।” (यिर्मयाह 1:5) इसी तरह, “उसने जगत की नींव रखे जाने से पहले ही मसीह में हमें चुना।” (इफिसियों 1:4) जब तुम अपनी माँ के गर्भ में बन रहे थे, तभी प्रभु ने तुम्हें एक विशेष उद्देश्य के साथ बनाया और अपनी योजना के लिए तुम्हें चुना।

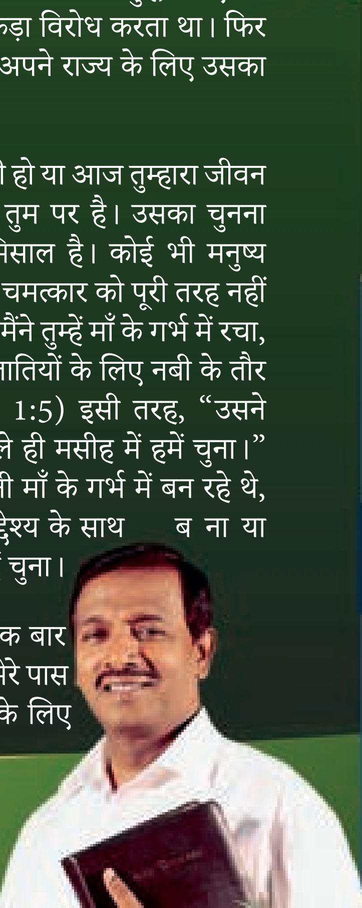

मुझे एक नौजवान याद है जो एक बार प्रार्थना के लिए एक परिवार को मेरे पास लाया था। जब मैं उस परिवार के लिए

प्रार्थना कर रहा था, तो वह कुछ दूरी पर चुपचाप खड़ा था। जैसे ही मैंने उसे देखा, प्रभु ने मेरे हृदय से कहा: “मैंने इसे चुना है। यह मेरी सेवा करेगा, और मैं इसका अद्भुत उपयोग करूँगा।” प्रार्थना के बाद, मैंने उससे कहा, “भाई, प्रभु ने तुम्हें चुना है। वह तुम्हें बहुत से लोगों के लिए आशीष के रूप में उपयोग करने वाले हैं।” वह मज़ाक उड़ाते हुए हँसा और बोला, “मैं बेफ़िक्र ज़िंदगी जी रहा हूँ—शराब पीता हूँ, धूम्रपान करता हूँ और मज़े करता हूँ। क्या तुम्हें सच में लगता है कि यीशु मुझ जैसे इंसान का उपयोग करेंगे?” फिर वह चला गया।

लेकिन दो साल बाद, वह मुझसे मिलने आया—इस बार उसके हाथों में बाइबल थी। उसने बड़ी खुशी के साथ बताया कि कैसे परमेश्वर ने उसका जीवन पूरी तरह बदल दिया और उसे सेवा के कार्य के लिए बुलाया। सचमुच, हम परमेश्वर के चुनने के रहस्य को कभी पूरी तरह नहीं समझ सकते। तुम्हारी वर्तमान परिस्थितियाँ चाहे कैसी भी हों, यदि प्रभु ने तुम्हें अपने उद्देश्य के लिए चुना है, तो वह निश्चित रूप से तुम्हें बुलाएँगे और अपने कार्य के लिए तुम्हारा उपयोग करेंगे।

प्रभु भेड़ चराने वाले एक युवा चरवाहे को चुनकर उसे एक देश का राजा बना सकते हैं। वे एक अनाथ और असहाय युवती को चुनकर उसे एक राज्य की रानी भी बना सकते हैं। उनका चुनना मनुष्य की समझ से कहीं परे है।

यीशु पापियों पर अनुग्रह करने वाले परमेश्वर हैं।

चाहे तुम कोई भी हो...

भले ही तुमने कभी यीशु पर विश्वास न किया हो...

भले ही तुमने उनका विरोध किया हो या उन्हें नकारा हो...

यीशु ने तुम्हें चुना है।

जब तुम स्वयं को उनके अलौकिक बुलाहट के प्रति समर्पित करते हो, तो वे तुम्हारे जीवन का उपयोग अपनी महिमा के लिए अद्भुत तरीके से करेंगे। वाचा के परमेश्वर ने नूह को चुनने के बाद उनके साथ वाचा बाँधी (उत्पत्ति 9:8–13)। उन्होंने अब्राहम को चुनने के बाद उनके साथ भी वाचा बाँधी (उत्पत्ति 12:1–3)। जब भी प्रभु किसी को चुनते हैं, तो वे उनके साथ वाचा बाँधते हैं, उन्हें अपनी आज्ञाएँ देते हैं और उन्हें अपने वादे सौंपते हैं। इसी तरह, जब परमेश्वर तुम्हें बुलाएँगे, तो वे तुम्हें अपने वादे भी देंगे और तुम्हारे साथ अपनी वाचा बाँधेंगे।

प्रिय युवा मित्रों,

जो परमेश्वर उन लोगों को आशीष देते हैं जिन्हें उन्होंने चुना है, वे तुम्हारे जीवन के हर क्षेत्र में तुम्हें आशीष देंगे।

आज यह प्रार्थना करो:

“प्रभु, क्योंकि आपने मुझे चुना है, इसलिए मुझे भरपूर और पूरी तरह से आशीष दीजिए।”

निश्चय ही, प्रभु तुम्हें असंख्य आशीष देंगे!

Counsel: Avi

घावों से उड़ान तक

मैं अभी कॉलेज के पहले वर्ष में हूँ। स्कूल के दिनों में मैं हमेशा अपनी कक्षा में प्रथम आती थी। कॉलेज में भी मैंने विज्ञान संकाय चुना है और पढ़ाई में अच्छा प्रदर्शन कर रही हूँ। मेरा परिवार आर्थिक रूप से संपन्न नहीं है। इसी कारण मेरे कपड़े मेरी सहपाठियों की तुलना में काफी सादे होते हैं। मेरे अधिकांश मित्र धनी परिवारों से ताल्लुक रखते हैं। वे अक्सर कार से कॉलेज आते हैं, जबकि मैं सादे कपड़े पहनकर बस से जाती हूँ। दुर्भाग्यवश, मेरी पृष्ठभूमि के कारण एक लेक्चरर मुझे हमेशा हीन दृष्टि से देखते हैं और दूसरों के सामने मेरा अपमान करते हैं। इससे मुझे गहरा दुख हुआ है और मेरी पढ़ाई पर ध्यान केंद्रित करने की क्षमता भी प्रभावित हुई है। जो लेक्चरर मुझे पसंद नहीं करते और मुझे अलग-थलग रखते हैं, उन्होंने मुझे अपने विषय में अनुत्तीर्ण (fail) भी कर दिया है। एक ओर मैं निराश महसूस कर रही हूँ, तो दूसरी ओर गहरे भावनात्मक पीड़ा से गुज़र रही हूँ। हालात इतने कठिन हो गए हैं कि मैंने कॉलेज जाना ही छोड़ दिया है।

मेरे जीवन में दो सपने हैं: अपनी छोटी सी झोपड़ी को एक अच्छे दो-मंज़िला घर में बदलना और अपने माता-पिता को कम से कम एक बार हवाई जहाज़ की यात्रा करवाना। लेकिन मेरे लेक्चरर के रवैये के कारण ऐसा लगता है जैसे मेरे सारे सपने चकनाचूर हो गए हैं। मुझे क्या करना चाहिए?

– सुबी, करूर

प्रिय बहन सुबी,

तुम्हारे पत्र से मुझे उस दर्द और भावनात्मक बोझ का स्पष्ट अनुभव हो रहा है जिसे तुम ढो रही हो। दुख की बात है कि कुछ शिक्षकों के असंवेदनशील व्यवहार ने कई होनहार छात्रों को भावनात्मक रूप से आहत किया है।

सुबी, मैं उस अपमान और उपेक्षा के एहसास को समझ सकता हूँ जिससे तुम गुज़र रही हो। इस पीड़ादायक स्थिति से निपटने के लिए तुम्हारे सामने दो मार्ग हैं। एक यह कि तुम अपने दर्द में ही लिपटी रहो, और दूसरा यह कि तुम उससे ऊपर उठकर आगे बढ़ो। वर्तमान में तुम्हारे पास दो विकल्प हैं:

विकल्प 1: *तुम अपने शिक्षक की कठोर बातों से हतोत्साहित हो सकती हो, यह मानकर कि "इस पढ़ाई से मुझे केवल दुख और अपमान ही मिला है," और घर पर ही रहने का निर्णय ले सकती हो।*

विकल्प 2:

तुम इन अस्थायी कठिनाइयों और दुखदायी बातों को अपने भविष्य के लिए सीढ़ी बनाने का मार्ग चुन सकती हो। तुम अपनी पढ़ाई में उत्कृष्ट प्रदर्शन कर सकती हो, अपने परिवार के लिए एक बेहतर घर बनाने का सपना पूरा कर सकती हो, और एक दिन अपने माता-पिता को उस हवाई यात्रा पर ले जा सकती हो जिसका तुमने हमेशा स्वप्न देखा है।

यदि तुम पहला विकल्प चुनती हो...

कॉलेज से दूर रहने से तुम्हें कुछ समय के लिए मानसिक शांति मिल सकती है। ऐसा भी लग सकता है कि तुम समस्या से बच गई हो। लेकिन शिक्षा तुम्हारे भविष्य के लिए सबसे बड़े निवेशों में से एक है। यदि तुम अभी इसे नज़रअंदाज़ करती हो, तो इसका तुम्हारे शेष जीवन पर गहरा प्रभाव पड़ सकता है। केवल अपमान से बचने के लिए घर पर रहने का निर्णय तुम्हें आज की समस्या से तो बचा सकता है, लेकिन यह कभी भी स्थायी समाधान नहीं बन सकता।

यदि तुम दूसरा विकल्प चुनती हो...

- यदि अवसर मिले, तो अपने लेक्चरर से सम्मान और शांति के साथ बात करो। अपनी भावनाएँ विनम्रता से साझा करो। संभव है कि वे तुम्हारी स्थिति को समझने लगें।

- साथ ही, उस विषय पर अधिक ध्यान दो जिसमें तुम अनुत्तीर्ण हुई थीं। जब तुम्हारी कड़ी मेहनत से उत्कृष्ट परिणाम मिलेंगे, तो धीरे-धीरे तुम्हारे प्रति तुम्हारे शिक्षकों का दृष्टिकोण बदल सकता है।

एक शिक्षक सीढ़ी की तरह होता है जो हमें ऊपर चढ़ने में सहायता करता है। कभी-कभी, दुर्भाग्यवश, वही सीढ़ी बाधा बन सकती है। लेकिन ये बाधाएँ ठोकर खाने का कारण बनेंगी या आगे बढ़ने का साधन, यह अंततः तुम्हारे चुनाव पर निर्भर है। यदि तुम अपने शिक्षक की अपेक्षा से अधिक मेहनत करती हो और उस विषय के प्रति समर्पित रहती हो, तो तुम निश्चित रूप से उत्कृष्ट अंक प्राप्त कर सकती हो।

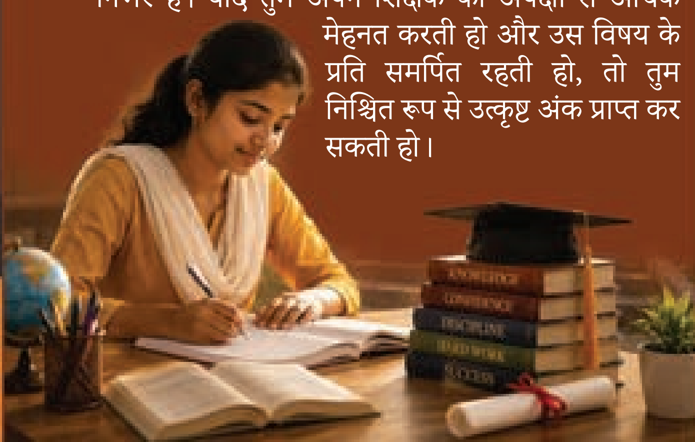

याद रखो, तुम्हारे दोनों सपने—एक बेहतर घर बनाना और अपने माता-पिता को हवाई जहाज़ की यात्रा पर ले जाना—काफ़ी हद तक तुम्हारी शिक्षा पर निर्भर करते हैं। आवश्यकता पड़ने पर विश्वसनीय मित्रों से सहायता लो और उन चीज़ों को बदलने पर ध्यान दो जो तुम्हारे नियंत्रण में हैं। समय के साथ, तुम्हारे शिक्षक का दृष्टिकोण भी बदल सकता है।

सुबी, धारा के विपरीत तैरना कभी आसान नहीं होता। लेकिन एक बार जब तुम दृढ़ संकल्प के साथ निर्णय ले लेती हो, तो तुम हार माने बिना अपने लक्ष्य की ओर बढ़ती रह सकती हो। कभी-कभी हम प्रतीक्षा करते हैं, इस उम्मीद में कि कोई हमें सांत्वना देगा, प्रोत्साहित करेगा और हमारा हौसला बढ़ाएगा। लेकिन जीवन के कई पड़ावों पर, हमें स्वयं खड़े होना, स्वयं को प्रोत्साहित करना और आगे बढ़ते रहना सीखना होता है।

सुबी, आज तुम जो निर्णय लेती हो, वह तुम्हारे जीवन में एक बिल्कुल नए अध्याय की शुरुआत बन सकता है। इससे भी बढ़कर, तुम्हारी यात्रा कई अन्य युवा महिलाओं को प्रेरित कर सकती है जो शायद इसी प्रकार की चुनौतियों का सामना कर रही हों।

आज यह प्रार्थना करो: "हे प्रभु, मुझे आशीष दें और मेरे दायरे को विस्तार दें। आपका हाथ मेरे साथ रहे, और मुझे सभी हानि, विफलता और दुख से बचाएँ।"

यीशु मसीह तुम्हें सामर्थ, बुद्धि और सफलता प्रदान करें।

शुभकामनाएँ! All The Best!

बाइबल की खोज-बीन

हेलो मित्रों! इस महीने, आइए बाइबल की अगली दो काव्यात्मक किताबों के पृष्टभूमि को देखें जो भजनसंहिता और नीतिवचन के बाद आते हैं—सभोपदेशक और श्रेष्ठगीत (सुलेमान के गीत)। ♥

सभोपदेशक (बुद्धि की किताब)

पारंपरिक रूप से सभोपदेशक की किताब को राजा सुलेमान से जोड़ा जाता है। हालांकि, लेखक ने स्वयं को “उपदेशक” (कोहेलेथ) के रूप में पेश किया है।

यह किताब जीवन के असली मतलब को समझाती है और हमें जीवन के कुछ सबसे ज़रूरी सवालों के बारे में गहराई से सोचने के लिए चुनौती देती है:

- स्थायी संतुष्टि किस चीज़ से मिलती है?
- क्या मजे करना काफी है?
- क्या धन काफी है?
- क्या समझ काफी है?

प्रमुख विषय-वस्तु

- ज़िंदगी कुछ समय के लिए है
- धन और मौज-मस्ती की सीमाएं
- परमेश्वर के आशीषों का आनंद लेना
- मौत पक्की है
- समझदारी की कीमत
- हमेशा के लिए जीना

मुख्य सन्देश

सभोपदेशक की पुस्तक का मुख्य सार यह है: परमेश्वर के बिना जीवन अंततः व्यर्थ हो जाता है।

श्रेष्ठगीत (प्रेम की कविता)

श्रेष्ठगीत (जिसे सुलेमान के गीत भी कहा जाता है) भी पारंपरिक रूप से राजा सुलेमान से जुड़ा है।

यह खूबसूरत किताब दूल्हे और दुल्हन के बीच के सच्चे प्रेम को प्रदर्शित करती है, जो विवाह की खूबसूरती का जश्न मनाती है। यह परमेश्वर द्वारा बनाए गए विवाह के रिश्ते की महानता को दिखाती है और सच्चे प्रेम की पवित्रता और पवित्रता पर ज़ोर देती है।

मुख्य किरदार

- दूल्हा – पारंपरिक रूप से कई लोग इसे राजा सुलेमान को दिखाते हैं।
- दुल्हन – शूलमाइट औरत (6:13), जो खूबसूरती से सच्चा, वफ़ादार और सच्चा प्यार दिखाती है।
- जेरूसलम की बेटियाँ (साथी) – वे प्रेम और विवाह की खुशी और खूबसूरती की गवाह हैं।

प्रमुख विषय-वस्तु

- पति-पत्नी के बीच सच्चा प्रेम
- सच्चे प्रेम की कीमत
- रिश्तों में भरोसा, वचन-बद्धता और घनिष्टता
- विवाह की पवित्रता
- प्रेम की सामर्थ और सदा रहने वाला स्वभाव

आध्यात्मिक महत्व

यहूदी परंपरा के अनुसार, यह पुस्तक परमेश्वर और इज़राइल के लोगों के बीच वाचा के प्रेम की निशानी है।

मसीही दृष्टीकोण से, इसे ज्यादातर मसीह और उनकी कलीसिया के बीच गहरे प्रेम और घनिष्टता की एक खूबसूरत तस्वीर के तौर पर समझा जाता है।

मुख्य संदेश

सच्चा प्रेम परमेश्वर का दिया हुआ वरदान है। यह सिर्फ़ एक भावना से कहीं ज़्यादा है—यह वचनबद्धता, विश्वासयोग्यता और एक पवित्र रिश्ते पर बना जीवन जीने का एक तरीका है।

याद रखें

सभोपदेशक की पुस्तक हमें सिखाती है कि जीवन का असली मतलब सिर्फ़ धन दौलत, खुशी या समझदारी में नहीं मिल सकता। परमेश्वर के बिना, इनमें से कोई भी हमेशा के लिए संतुष्टि नहीं दे सकता। श्रेष्ठगीत परमेश्वर के दिए प्रेम की पवित्रता का बहुत खूबसूरती से जश्न मनाती है, विवाह की पवित्रता और वचनबद्धता, विश्वासयोग्यता और अटूट प्रेम के महत्व को दिखाती है।

ये दोनों किताबें मिलकर हमें याद दिलाती हैं कि "जीवन की वास्तविक संतुष्टि तभी मिलती है जब हम परमेश्वर को अपने जीवन के केंद्र में रखते हैं।"

हमें उम्मीद है कि यह श्रंखला आपके लिए एक आशीष रही होगी।

पिछले सात महीनों में, हमने पुराने नियम की 22 पुस्तकों की पृष्ठभूमि को देखा है।

अगर आपने अभी तक बाइबल पढ़ना शुरू नहीं किया है, तो आज ही क्यों नहीं शुरू करते? परमेश्वर इस अद्भुत सफ़र में आपकी ज़रूर मदद करेंगे।

दबाव में...

हेलो मित्रों! आप सब कैसे हैं? मुझे इस महीने फिर से आपसे मिलकर बहुत खुशी हो रही है। मुझे उम्मीद है कि यह सीरीज़ आपके लिए उपयोगी और ज्ञानवर्धक रही होगी।

इस महीने हम जानेंगे कि बहुत ज़्यादा दबाव में हीरा कैसे बनता है और इससे हमें अपनी ज़िंदगी के बारे में क्या सीख मिलती है। आइए, शुरू करते हैं!

हीरा एक प्राकृतिक खनिज है, जो पूरी तरह कार्बन परमाणुओं से बना होता है। यह धरती के बहुत भीतर—सतह से लगभग 150 से 200 किलोमीटर नीचे—बनता है, जहाँ अत्यधिक तापमान, लगभग 900–1,300°C, और बहुत ज़्यादा दबाव होता है। यह दबाव वायुमंडलीय दबाव से लगभग 45,000 से 60,000 गुना अधिक होता है।

इन विशेष परिस्थितियों में कार्बन परमाणु एक अत्यंत मज़बूत क्रिस्टलीय संरचना में बदल जाते हैं। इसी प्रक्रिया के परिणामस्वरूप हीरा बनता है, जो धरती पर पाए जाने वाले सबसे कठोर और मूल्यवान पदार्थों में से एक है।

हीरे की खुदाई कैसे होती है?

1. ओपन-पिट माइनिंग

जब हीरे धरती की सतह के अपेक्षाकृत पास पाए जाते हैं, तो उनके ऊपर मौजूद चट्टानों और मिट्टी की परतों को हटाया जाता है। इसके लिए बड़ी मशीनों और नियंत्रित विस्फोटकों का इस्तेमाल किया जाता है, ताकि हीरे वाली चट्टान तक पहुँचा जा सके।

2. भूमिगत माइनिंग

जब हीरे धरती के बहुत नीचे होते हैं, तो उन्हें निकालने के लिए भूमिगत सुरंगें बनाई जाती हैं। इन सुरंगों के माध्यम से हीरे वाली चट्टानों तक पहुँचकर उन्हें सुरक्षित रूप से बाहर निकाला जाता है।

3. एल्यूवियल माइनिंग

कुछ हीरे नदियों के बहाव के साथ बहकर नदी के तल, किनारों या समुद्र तटों पर जमा हो जाते हैं। ऐसे स्थानों से हीरे निकालने की प्रक्रिया को एल्यूवियल माइनिंग कहा जाता है।

हीरे को साफ़ करने और तराशने के चरण

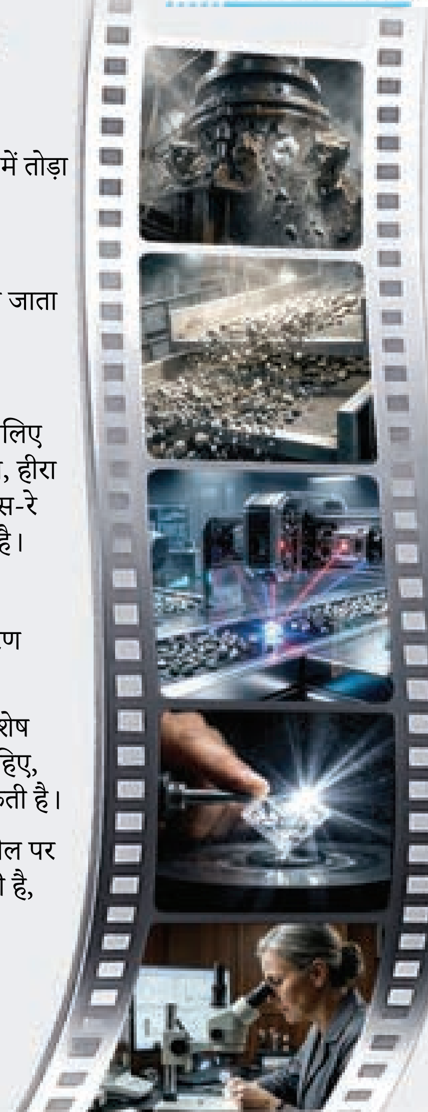

1. क्रशिंग या कुचलना

हीरे वाली बड़ी चट्टानों को सबसे पहले भारी मशीनों की सहायता से छोटे-छोटे टुकड़ों में तोड़ा जाता है।

2. स्क्रीनिंग या छँटाई

इसके बाद कुचली हुई सामग्री को विभिन्न आकारों वाली छलनियों या स्क्रीन से गुज़ारा जाता है, ताकि टुकड़ों को उनके आकार के अनुसार अलग किया जा सके।

3. घनत्व के आधार पर अलग करना और एक्स-रे या लेज़र तकनीक

हीरा अपने आसपास मौजूद अधिकांश चट्टानों की तुलना में अधिक घना होता है। इसलिए घनत्व के आधार पर उसे अन्य पदार्थों से अलग किया जा सकता है। इसके अतिरिक्त, हीरा प्रकाश को एक विशेष तरीके से परावर्तित करता है। इस गुण के कारण आधुनिक एक्स-रे और लेज़र तकनीक की सहायता से हीरे की पहचान बहुत सटीकता से की जा सकती है।

4. कटिंग और पॉलिशिंग

खदान से निकला कच्चा हीरा चमकदार नहीं होता। वास्तव में, वह अक्सर एक साधारण पत्थर जैसा दिखाई देता है।

उसकी वास्तविक सुंदरता प्रकट करने के लिए कुशल कारीगर हीरे के कणों से बनी विशेष आरी की सहायता से उसे सावधानीपूर्वक काटते हैं। प्रत्येक कट बहुत सटीक होना चाहिए, क्योंकि एक छोटी-सी गलती भी हीरे की गुणवत्ता और कीमत को काफी कम कर सकती है।

काटने के बाद भी हीरा अपनी पूरी चमक नहीं दिखाता। इसके बाद उसे पॉलिशिंग व्हील पर हीरे के पाउडर की सहायता से पॉलिश किया जाता है। यह प्रक्रिया तब तक जारी रहती है, जब तक हीरा प्रकाश को अत्यंत सुंदर ढंग से परावर्तित करने न लगे।

5. ग्रेडिंग या गुणवत्ता का निर्धारण

अंत में प्रत्येक हीरे का मूल्यांकन उसके वज़न, कट की गुणवत्ता, रंग और आंतरिक स्पष्टता के आधार पर किया जाता है। इन विशेषताओं के आधार पर हीरे की गुणवत्ता और कीमत निर्धारित होती है।

"मैंने तुम्हें शुद्ध किया है, परन्तु चाँदी की तरह नहीं; मैंने तुम्हें दुख की भट्टी में परखा है।"— यशायाह 48:10

जैसे यह आयत हमें याद दिलाती है, हीरा स्वाभाविक रूप से चमकदार या सुंदर दिखाई नहीं देता। उसे शुद्ध करने, काटने और पॉलिश करने की प्रक्रिया ही उसकी चमक और सुंदरता को प्रकट करती है।

हीरा धरती के जितना अधिक नीचे होता है, उसे निकालने की प्रक्रिया उतनी ही कठिन और विशेष होती है। इसी तरह, परमेश्वर हमें जिस प्रकार शुद्ध करते हैं, वह उनके साथ हमारे संबंध की गहराई और उस उद्देश्य पर निर्भर करता है, जिसके लिए वे हमारे जीवन को आकार दे रहे हैं।

हीरा केवल अत्यधिक गर्मी और भारी दबाव में ही बन सकता है। उसी प्रकार, हमारी आज़माइशें, कठिनाइयाँ, निराशाएँ और हानियाँ अक्सर उस प्रक्रिया का आवश्यक हिस्सा होती हैं, जिसके द्वारा परमेश्वर हमें ऐसे आध्यात्मिक हीरों के रूप में ढालते हैं जो उनकी महिमा को प्रकट करते हैं। जैसे हीरे को धरती की सतह पर लाने से पहले उसके आसपास की चट्टानों को तोड़ना पड़ता है, वैसे ही हमारे पापी स्वभाव को भी तोड़ा और बदला जाना आवश्यक है, ताकि हमारे जीवन में मसीह का चरित्र स्पष्ट रूप से दिखाई दे सके।

हीरा अपनी सबसे अधिक चमक तब दिखाता है, जब उसे काटा और पॉलिश किया जाता है। उसी तरह, यदि हम संसार को मसीह की रोशनी दिखाना चाहते हैं, तो हमें कभी-कभी दर्दनाक आज़माइशों और कठिन परिस्थितियों से होकर गुज़रना पड़ सकता है।

हीरा बनने में समय, अत्यधिक गर्मी और भारी दबाव लगता है। इसी प्रकार, परमेश्वर हमारी ज़िंदगी में जो कार्य कर रहे हैं, उसके लिए भी धैर्य और प्रतीक्षा की आवश्यकता होती है। उनकी शुद्ध करने वाली प्रक्रिया में जल्दबाज़ी नहीं की जा सकती।

आज आप जिस भी आज़माइश का सामना कर रहे हैं, वह आपकी कहानी का अंत नहीं है। परमेश्वर आपको सावधानीपूर्वक एक अनमोल आध्यात्मिक हीरे के रूप में ढाल और शुद्ध कर रहे हैं—ऐसे हीरे के रूप में, जिसकी कीमत हमेशा बनी रहेगी।

(जारी रहेगा...)

प्रार्थना मार्गदर्शिका

सितंबर 2026

रेल दुर्घटनाएँ

पूरे भारत में रेल दुर्घटनाओं की बढ़ती संख्या चिंता का विषय बन गई है। असम (जून 2026) और झारखंड (जनवरी 2026) में हाल ही में हुई ट्रेन दुर्घटनाओं के बाद, भारतीय रेलवे यात्रियों की सुरक्षा को बेहतर बनाने के लिए और अधिक रेल मार्गों पर 'कवच 4.0' (Kavach 4.0) ऑटोमैटिक ट्रेन टक्कर-रोधी प्रणाली का विस्तार कर रहा है।

आइए हम प्रार्थना करें कि बार-बार होने वाली रेल दुर्घटनाओं को रोका जा सके और भारतीय रेलवे के अधिकारियों को सुरक्षा उपायों को मजबूत करने और हर यात्री की भलाई सुनिश्चित करने की समझ मिले।

साइबर धोखाधड़ी और डिजिटल स्कैम

नकली नौकरी के स्कैम, निवेश धोखाधड़ी, OTP स्कैम और फिशिंग हमलों के मामले खतरनाक दर से बढ़ रहे हैं। छात्र और युवा पेशेवर इससे सबसे ज्यादा प्रभावित हैं।

आइए हम प्रार्थना करें कि लोग साइबर अपराध से सुरक्षित रहें, और उनकी व्यक्तिगत जानकारी, वित्तीय संसाधन और डिजिटल सुरक्षा सुरक्षित रहे।

दवाओं की अवैध ऑनलाइन बिक्री

हाल ही में, पुलिस ने मदुरै, तिरुचिरापल्ली और कोयंबटूर में एक ऐसे नेटवर्क को पकड़ा जो ऑनलाइन प्लेटफॉर्म और कूरियर सेवाओं के माध्यम से बिना वैध मेडिकल प्रिस्क्रिप्शन के प्रिस्क्रिप्शन-नियंत्रित दवाएं, सैकड़ों नशीली गोलियां, मेडिकल शीशियां और इंजेक्शन अवैध रूप से बेच रहा था।

जांच से पता चला कि ये दवाएं युवाओं, कॉलेज के छात्रों और दिहाड़ी मजदूरों को बांटी जा रही थीं।

आइए हम प्रार्थना करें कि नशीली दवाओं के अवैध निर्माण, वितरण और बिक्री में शामिल आपराधिक नेटवर्क पूरी तरह से खत्म हो जाएं।

कृषि (Agriculture)

सितंबर खरीफ फसलों की वृद्धि और देखभाल के लिए एक महत्वपूर्ण मौसम है। इस अवधि के दौरान धान, गन्ना और कपास जैसी फसलों के पनपने के लिए पर्याप्त बारिश जरूरी है। कम या बहुत ज़्यादा बारिश, दोनों ही फसलों को नुकसान पहुंचा सकती हैं और कृषि उपज को कम कर सकती हैं।

आइए हम प्रार्थना करें कि मौसमी बारिश सही समय पर और सही मात्रा में हो, देश भर में फसलें नुकसान से बची रहें, और किसानों को उनकी कड़ी मेहनत के लिए भरपूर फसल और उचित आय मिले।

सिंथेटिक ड्रग्स

युवाओं में LSD, मेथामफेटामाइन और केटामाइन जैसी सिंथेटिक दवाओं का इस्तेमाल तेजी से बढ़ रहा है। ये पदार्थ शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य को गंभीर रूप से नुकसान पहुंचाते हैं और कई लोगों को नशे की लत की ओर धकेलते हैं। हालांकि सरकार और कई संस्थाएं इस समस्या से निपटने के लिए जागरूकता फैला रही हैं, आइए हम प्रार्थना करें कि सिंथेटिक ड्रग्स का उत्पादन, तस्करी और बिक्री पूरी तरह खत्म हो जाए, और युवा हर तरह के नशे की लत से मुक्त हो सकें।

NEET परीक्षा

इस साल, 22 लाख से ज़्यादा छात्र NEET परीक्षा में शामिल हुए। नतीजे आने के बाद, कई छात्रों को मेडिकल कॉलेज में दाखिले, काउंसलिंग की प्रक्रिया, सरकारी और प्राइवेट कॉलेजों में सीट पाने, पढ़ाई के खर्च और भविष्य के करियर से जुड़े फैसलों जैसी चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है।

कुछ छात्र निराशा और भावनात्मक तनाव से भी जूझ रहे हैं क्योंकि उन्हें उम्मीद के मुताबिक स्कोर या रैंक नहीं मिली।

आइए हम प्रार्थना करें कि हर NEET उम्मीदवार को सही कॉलेज और कोर्स चुनने में सही मार्गदर्शन मिले, वे शांति और आत्मविश्वास के साथ भविष्य का सामना करें, और जो लोग मेडिकल पेशे के ज़रिए सेवा करना चाहते हैं, परमेश्वर उनके लिए सही रास्ते खोलें और उनकी पढ़ाई के सफ़र पर अपना अनुग्रह बनाए रखें।

लू (Heatwave)

इस साल अप्रैल से जून के बीच, उत्तर, मध्य और उत्तर-पश्चिम भारत के कई इलाकों में भीषण लू चली। कई जगहों पर तापमान 45°C से 48°C के बीच पहुंच गया। अनुमान है कि भारत में हर दिन 3,400 से ज़्यादा लोग गर्मी से जुड़ी समस्याओं से प्रभावित होते हैं। भीषण गर्मी के कारण हीटस्ट्रोक, पीने के पानी की कमी, बिजली की ज़्यादा मांग और खेती की पैदावार में कमी जैसी समस्याएं भी हुईं।

आइए हम प्रार्थना करें कि भीषण लू का असर कम हो, अच्छी बारिश से धरती को राहत मिले, और किसान व दिहाड़ी मज़दूर इसके बुरे असर से सुरक्षित रहें।

आत्महत्या

रिपोर्टों से पता चलता है कि भारत में हर साल 1,70,000 से ज़्यादा लोग आत्महत्या करते हैं। आत्महत्या करने वालों में लगभग 70–75% पुरुष होते हैं। इसके अलावा, तनाव, अकेलेपन, पारिवारिक समस्याओं, पढ़ाई के दबाव और आर्थिक तंगी जैसी वजहों से हर साल लगभग 10,000 से 13,000 छात्र अपनी जान गंवा देते हैं।

आइए हम प्रार्थना करें कि छात्र, युवा और आम लोग मानसिक और भावनात्मक रूप से मज़बूत बनें, देश भर में आत्महत्या की दर कम हो, और ईश्वर लोगों के दिलों में उम्मीद और जीने की चाहत भरें।

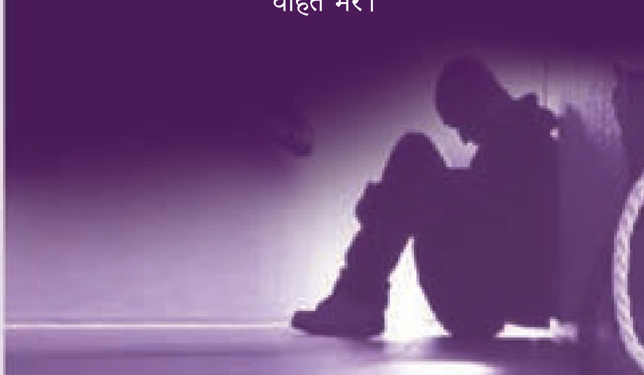

आत्मा का विषहरण

इन आखिरी दिनों में युवाओं को परमेश्वर से दूर करने के लिए शैतान के सबसे चालाक और ताकतवर हथियारों में से एक है — संगीत(म्यूजिक)। शैतान झूठ का पिता है, और म्यूजिक का हमारे जीवन पर बहुत गहरा असर होता है। हम जो गाने सुनते हैं, जो दृश्य देखते हैं, जो विचार अपनाते हैं और जो संदेश बार-बार सुनते हैं, उनमें हमारे विचारों, भावनाओं, आदतों और जीवनशैली को धीरे-धीरे बदलने की ताकत होती है।

आजकल का ज़्यादातर गैर-धार्मिक(सेक्युलर) संगीत अश्लीलता, अनैतिक मूल्यों, नकारात्मक सोच, हिंसा, वासना, घमंड, बदले की भावना और ऐसी जीवनशैली को बढ़ावा देता है जो परमेश्वर के वचन के विरोध में है और जिन्हें वह नापसंद करता है। ऐसे संगीत के लगातार संपर्क में रहने से हमारा आध्यात्मिक जीवन धीरे-धीरे कमज़ोर और खराब हो सकता है।

इसके अलावा, कई आधुनिक कॉन्सर्ट में खुलेआम शैतानी तस्वीरें और एंटी-क्राइस्ट (मसीह-विरोधी) के प्रतीक दिखाए जाते हैं। कुछ संगीतकारों और मशहूर हस्तियों ने खुलेआम यीशु मसीह और क्रूस का मज़ाक उड़ाया है, जबकि दूसरों ने खुलेआम दावा किया है कि उन्होंने लूसिफ़र के साथ समझौता किया है। ऐसे संगीत और उसके संदेशों को लगातार अपनाने से अनजाने में ही हमारे दिलों के दरवाज़े नुकसानदायक आध्यात्मिक प्रभावों के लिए खुल सकते हैं।

हानिकारक संगीत का प्रभाव

- यह अश्लीलता, भद्दी भाषा और अनैतिक बातचीत को सामान्य बना देता है।
- अशुद्ध और नकारात्मक बोल धीरे-धीरे हमारे सोचने, बोलने और जीवन के प्रति प्रतिक्रिया करने के तरीके को प्रभावित करते हैं।
- यह गुस्सा, नफ़रत, वासना और बदले की भावना जैसी भावनाओं को भड़काता है।
- परमेश्वर को नापसंद करने वाली चीज़ों के लगातार संपर्क में रहने से वे सामान्य लग सकती हैं, जिससे परमेश्वर के सत्य की तुलना में सांसारिक संस्कृति हमारे लिए ज़्यादा महत्वपूर्ण हो जाती है।
- यह धीरे-धीरे हमारी पहचान और मूल्यों को बदल देता है।
- बहुत से लोग जो सिर्फ़ इसलिए ऐसा संगीत सुनते हैं क्योंकि यह "ट्रेंडी" या "कूल" लगता है, वे अक्सर चिंता, अकेलेपन, डर, नींद न आने, आध्यात्मिक संघर्षों और यहाँ तक कि आत्महत्या के विचारों से जूझते हैं, और उन्हें सच्ची शांति नहीं मिल पाती।

अपना डिटॉक्स कैसे शुरू करें

1. बोल (Lyrics) पर ध्यान दें

कोई भी गाना सुनने से पहले, स्वयं से पूछें: "क्या यह गाना मेरे मन को शुद्ध करेगा, या यह मेरे आध्यात्मिक जीवन को कमज़ोर करेगा?"

2. नकारात्मकता को हटाएँ और अपने जीवन को अच्छी चीज़ों से भरें

डिटॉक्स का मतलब सिर्फ़ हानिकारक संगीत को रोकना नहीं है।

- चैनल को अनसब्सक्राइब करें।
- आर्टिस्ट को अनफॉलो करें।
- अपनी प्लेलिस्ट डिलीट करें।

फिर जानबूझकर उसकी जगह परमेश्वर की महिमा करने वाले स्तुति और आराधना के गाने शामिल करें। (भले ही कोई बहुत सुंदर गाने लिखे या उन्हें बहुत अच्छे से गाए, फिर भी अगर उनकी शिक्षाएँ बाइबल की बातों के विरोध में हैं, तो उनके संगीत को अपने-आप परमेश्वर की महिमा करने वाला संगीत नहीं माना जाना चाहिए।)

3. जो अच्छा है, उसे थामे रखें

ईसाई गाने सुनते समय भी कलाकारों के कामों और उनकी सिखाई गई बातों को परमेश्वर के वचन की कसौटी पर परखें। सिर्फ़ उसी बात को अपनाएँ जो बाइबल के अनुसार सही हो। "सब बातों को परखो; जो अच्छा है, उसे थामे रखो" (1 थिस्सलुनीकियों 5:21)

4. परमेश्वर की आवाज़ को प्राथमिकता दें

बाइबल पढ़ने, प्रार्थना करने और आराधना करने के ज़रिए अपने हृदय और दिमाग को परमेश्वर के सत्य से भरें। जैसे-जैसे आपके जीवन में परमेश्वर की आवाज़ ज़्यादा साफ़ और मज़बूत होती जाएगी, दुनिया की आवाज़ें अपने-आप कमज़ोर पड़ती जाएँगी।

वह जंगल जिसने यीशु को जाना

सन् 1955 में, कनाडा के प्रतिष्ठित 'प्रैरी बाइबल इंस्टीट्यूट' में मिशनरी कार्य से संबंधित एक बैठक हुई। इस बैठक में, एक मिशनरी ने न्यू गिनी (इंडोनेशिया) में रहने वाले सैकड़ों आदिवासी लोगों के बारे में उत्साह के साथ बताया, जिन्होंने कभी यीशु मसीह का सुसमाचार नहीं सुना था। उन्होंने उन तक यह शुभ समाचार पहुँचाने की शीघ्र आवश्यकता पर गंभीरता से प्रकाश डाला।

उस संदेश ने डॉन रिचर्डसन नामक एक युवक के हृदय को गहराई से स्पर्श किया। उन्हें स्पष्ट रूप से परमेश्वर का आह्वान अनुभव हुआ: "मैं चाहता हूँ कि तुम उन लोगों के पास जाओ।" बाद में, उनका विवाह कैरोल रिचर्डसन से हुआ, जिन्हें भी मिशनरी बनने का बुलावा मिला था। 1962 में, डॉन और कैरोल अपने छोटे बच्चे के साथ न्यू गिनी चले गए, ताकि वे सावी जनजाति के बीच मिशनरी के रूप में सेवा कर सकें।

सावी लोग अपनी अत्यंत हिंसक परंपराओं के लिए प्रसिद्ध थे। वे सिर काटना, नरभक्षण (कैनिबलिज्म) करना और विश्वसनीय मित्रों को मारने से पूर्व उन्हें धोखा देना वीरता का कार्य मानते थे। वे घने जंगलों, दलदलों, मलेरिया, मगरमच्छों और विषैले कीड़ों से परिपूर्ण खतरनाक वातावरण में निवास करते थे।

अनेक लोगों ने उनसे पूछा, "तुम ऐसी जगह पर कैसे जीवित रहोगे?" परंतु डॉन का एक दृढ़ विश्वास था: यदि परमेश्वर ने उन्हें बुलाया है, तो परमेश्वर निश्चित रूप से उनकी रक्षा करेंगे।

एक दिन, जब डॉन अपनी पत्नी और दो छोटे बच्चों के साथ नाव से यात्रा कर रहे थे, तो नाव अचानक पलट गई। वे गहरे जल में गिर गए जहाँ मगरमच्छ थे और डूबने लगे। उस भयावह क्षण में, डॉन चिल्लाए, "हे प्रभु, हमारी सहायता करो!" परमेश्वर के अनुग्रह से, वे अपनी पत्नी और बच्चों को जीवित बचाने में सफल रहे। उस दिन, उन्होंने पुनः अनुभव किया कि परमेश्वर कभी भी उन्हें नहीं छोड़ते जिन्हें वह अपनी सेवा के लिए आह्वान करते हैं।

सावी लोगों के बीच निवास करने के पश्चात, रिचर्डसन परिवार ने बिना किसी पुस्तक, शिक्षक या अनुवादक की सहायता के सावी भाषा सीखना प्रारंभ किया। यह अत्यंत कठिन भाषा थी—प्रत्येक क्रिया (verb) के 19 भिन्न-भिन्न काल (tense) रूप थे। प्रतिदिन आठ से दस घंटे अध्ययन करके, डॉन ने अंततः उस भाषा में निपुणता प्राप्त कर ली। उनके अथक प्रयासों से सावी भाषा को लिखित रूप मिला, और बाद में, 'न्यू टेस्टामेंट' (नया नियम) का उनकी भाषा में अनुवाद किया गया।

वर्षों की निष्कपट मेहनत के बाद, डॉन ने अंततः सावी लोगों को यीशु मसीह के प्रेम और उद्धार के बारे में बताना प्रारंभ किया। हालाँकि, एक गंभीर चुनौती उपस्थित हुई। जब उन्होंने उन्हें यहूदा इस्करियोती द्वारा यीशु को धोखा देने की कथा सुनाई, तो लोगों ने कहा, “यहूदा ही वास्तविक नायक है!” उनकी संस्कृति में, किसी को पराजित करने के लिए धोखा देना साहस का एक प्रशंसनीय कार्य माना जाता था।

यह देखकर डॉन अत्यंत निराश हुए। उन्होंने परमेश्वर से प्रार्थना की, “हे प्रभु, मैं इन लोगों को सुसमाचार के बारे में कैसे समझाऊँगा?” उसी समय, डॉन ने सावी जनजाति के दो शत्रु गाँवों के बीच एक अद्भुत शांति समझौते को देखा। एक गाँव के मुखिया ने अपने छोटे बच्चे को दूसरे गाँव के मुखिया को सौंप दिया। बदले में, दूसरे मुखिया ने भी अपने बच्चे को उन्हें सौंप दिया। जब तक वे बच्चे जीवित रहते, कोई भी गाँव दूसरे पर आक्रमण नहीं करता था। इन बच्चों को “शांति के बच्चे” (Peace Children) कहा जाता था।

जैसे ही डॉन ने इस अनूठी परंपरा को देखा, उनके हृदय में एक नई समझ जागृत हुई। अगली बार जब उन्होंने सावी लोगों से बात की, तो उन्होंने व्याख्या की: “परमेश्वर और मनुष्य के बीच शांति स्थापित करने के लिए, परमेश्वर ने अपने एकमात्र पुत्र, यीशु मसीह को इस संसार में भेजा। वही परमेश्वर का सच्चा ‘शांति का पुत्र’ है।” उसी पल ही, उनकी आँखें खुल गईं। पहली बार, उन्हें यीशु के बलिदान का वास्तविक अर्थ समझ आया। उन्हें यहूदा के धोखे की गंभीरता का भी बोध हुआ। कुछ ही समय में, अनेक लोगों ने यीशु मसीह को अपना व्यक्तिगत उद्धारकर्ता स्वीकार कर लिया। उन्होंने जादू-टोना, हिंसा और नरभक्षण वाली अपनी प्राचीन जीवनशैली को त्याग दिया।

1972 में, उनके बीच “पीस हाउस” (शांति का घर) नामक एक बड़ा चर्च निर्मित किया गया। परमेश्वर के आह्वान के प्रति एक व्यक्ति की आज्ञाकारिता ने संपूर्ण जनसमूह का इतिहास परिवर्तित कर दिया।

आज भी, हमारे आस-पास लाखों लोग ऐसे हैं जिन्होंने कभी मसीह को सत्य रूप से नहीं जाना है। डॉन रिचर्डसन की भाँति, जो साहस करके सावी जनजाति के पास गए थे, क्या हम उन लोगों तक शांति का सुसमाचार पहुँचाने के लिए तैयार हैं जिन्होंने इसे कभी नहीं सुना है?

"क्योंकि वही हमारा मेल है।" इफिसियों 2:14

समाचार

प्रतिदिन 502 लोगों की मौत: 2025 में सड़क हादसों में 1,80,000 से ज़्यादा लोगों की जान गई

सड़क परिवहन और राजमार्ग मंत्रालय द्वारा लोकसभा में पेश किए गए आंकड़ों के अनुसार, 2025 में पूरे भारत में सड़क हादसों में 1,80,000 से ज़्यादा लोगों की जान गई—यानी हर दिन औसतन 502 मौतें हुईं।

सभी राज्यों में, उत्तर प्रदेश में मौतों की संख्या में सबसे ज़्यादा बढ़ोतरी दर्ज की गई; यहाँ मरने वालों की संख्या 2024 में 24,118 से बढ़कर 2025 में 27,550 हो गई। इसके विपरीत, पंजाब में सड़क हादसों से होने वाली मौतों में काफी कमी आई, जहाँ यह संख्या 2024 में 4,759 से घटकर 2025 में 3,062 रह गई।

2025 में सड़क हादसों की कुल संख्या पिछले साल की तुलना में 5.3% बढ़ी और देश भर में 5,10,000 मामलों का आंकड़ा पार कर गई। सड़क हादसों में होने वाली मौतों में भी 3.5% की वृद्धि हुई, जो सुरक्षित सड़कों और ज़िम्मेदारी से गाड़ी चलाने की बढ़ती ज़रूरत को उजागर करता है।

- हिंदु तमिल थिसई, 25 जुलाई।

भारत में छह महीनों के भीतर साइबर अपराध की 12.7 लाख शिकायतें दर्ज हुईं

भारत में साइबर अपराध के कई रूपों में तेज़ी से बढ़ोतरी हो रही है, जिनमें डिजिटल अरेस्ट स्कैम, ऑनलाइन बैंकिंग धोखाधड़ी, हैकिंग, सोशल मीडिया स्कैम, ऑनलाइन वित्तीय धोखाधड़ी और मैलवेयर हमले शामिल हैं।

1 जनवरी से 30 जून के बीच, देश भर में साइबर अपराध की 12.71 लाख (1.271 मिलियन) शिकायतें दर्ज की गईं।

इनमें से 2,86,000 शिकायतें ऑनलाइन बैंकिंग और फंड ट्रांसफर धोखाधड़ी से संबंधित थीं। कुल मिलाकर, अनुमान है कि इस छह महीने की अवधि में साइबर अपराधियों ने पीड़ितों से लगभग ₹10,178 करोड़ की धोखाधड़ी की।

अकेले तमिलनाडु में साइबर अपराध की 63,116 शिकायतें दर्ज की गईं, जिसके परिणामस्वरूप लगभग ₹897.79 करोड़ का वित्तीय नुकसान हुआ।

हिंदु तमिल थिसई, 15 जुलाई।